4

इतिहास-शिक्षण और राष्ट्रीय एकता
[HISTORY TEACHING AND NATIONAL INTEGRATION]

"National integration aims at unifying the people and not necessarily among them conform to one pattern." —NCERT

विषय-प्रवेश
(INTRODUCTION)

प्रत्येक देश अपने निवासियों में राष्ट्रीय भावना का विकास करना चाहता है, क्योंकि यह माना जाता है कि जब व्यक्ति में राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित हो जायेगा तभी वह अपनी स्वतन्त्रता की प्राप्ति तथा उसकी रक्षा कर सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि राष्ट्रीय दृष्टिकोण के फलस्वरूप राष्ट्रीय विकास बड़ी तीव्र गति से होता है। अतः प्रत्येक देश में राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए शिक्षा को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और उपयोगी साधन माना गया और राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण एवं राष्ट्रीय भावना का विकास शिक्षा के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य निर्धारित किये गये। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम में इतिहास को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया।

जब हम शताब्दियों की दासता से स्वतन्त्र हुए तब हमारे कर्णधारों ने इस बात का अनुभव किया कि राष्ट्रीय एकता स्थापित करने तथा राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के दृष्टिकोण से इतिहास को विद्यालय पाठ्यक्रम में महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। विभिन्न आयोगों, समितियों तथा विचार सम्मेलनों ने इस विचारधारा का समर्थन किया। साथ ही इन विचारों को क्रियान्वित करने के लिए विभिन्न सुझाव दिए।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता
(NEED OF NATIONAL INTEGRATION)

यदि आज भारत एक समृद्धिशाली देश बनना चाहता है तो यह आवश्यक है कि उसकी राष्ट्रीय एकता को सुरक्षित किया जाय। इस समय आर्थिक विषमताओं, भाषायी विभिन्नताओं, सामाजिक विषमता एवं अन्तरों, धार्मिक भेदभावों, स्थानीय तथा

Scanned with CamScanner

क्षेत्रीय लगावों आदि ने हमारे राष्ट्रीय जीवन को निर्बल बना दिया है। इस कारण यह आवश्यक हो गया है कि भारत की राष्ट्रीय एकता को कायम किया जाय। साथ ही इस पर बल दिया जाने लगा है कि इस एकता को कायम करने के लिए विरोधात्मक एवं ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों को दबाकर राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित एवं अग्रसर बनाने वाली शक्तियों को प्रोत्साहित किया जाय। भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकीकरण हमें आन्तरिक तथा बाह्य खतरों से भी सुरक्षा प्रदान करेंगे। साथ ही इनके द्वारा भविष्य में सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक उन्नति भी प्रदान की जायेगी।

संक्षेप में भारत के लिए राष्ट्रीय एकता को प्राप्त करना निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है—

(1) विविधता में अपनी एकता को कायम रखने के लिए,

(2) तीव्र गति से सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक उन्नति को प्राप्त करने के लिए,

(3) विभिन्न समूहों की संस्कृति को राष्ट्रीय संस्कृति के अंश के रूप में विकसित करके राष्ट्र के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध बनाने के लिए,

(4) समय-समय पर उपस्थित होने वाली ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों पर रोक लगाने के लिए,

(5) बाह्य आक्रमणों एवं आन्तरिक खतरों से सुरक्षा प्राप्त करने के लिए।

राष्ट्रीय एकता का अर्थ
(MEANING OF NATIONAL INTEGRATION)

राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वप्रथम व्यक्ति को भावात्मक रूप से एकीकृत होना आवश्यक है। हम उस व्यक्ति को भावात्मक रूप से एकीकृत कह सकते हैं जो सुसंतुलित (Well-balanced) व्यक्तित्व रखता है। साथ ही उसकी प्रेरणाएँ, आकांक्षाएँ तथा भावनाएँ पर्याप्त रूप से निर्मल हैं और उसके हित पूर्णतः संकुचित एवं स्वार्थपूर्ण नहीं हैं। जब इस दृष्टिकोण को राष्ट्र के रूप में ग्रहण करते हैं तो राष्ट्रीय एकता का अर्थ यह लिया जाता है कि संकुचित भावनाओं, पक्षपातों, भाषायी तथा सांस्कृतिक विभिन्नताओं, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक कट्टरता एवं विषमताओं को दूर करके व्यापक एवं उदार दृष्टिकोण का निर्माण किया जाय जिससे व्यक्ति दूसरे सांस्कृतिक एवं जातीय समूहों को सम्मान की दृष्टि से देख सके और उनके साथ सहिष्णुता की नीति को प्रयोग में ला सके। यह दृष्टिकोण उनको क्षुद्र एवं वर्गीय पक्षपातों से ऊपर उठायेगा और देश-प्रेम तथा राष्ट्रीय गर्व की भावना का विकास करेगा। संक्षेप में, हम कह सकते हैं। कि राष्ट्रीय एकता व्यक्तियों को मन, वचन तथा कर्म से एक बनाने पर बल देती है। जब व्यक्ति मन, वचन तथा कर्म से एक हो जायेंगे तक उसका फल राष्ट्रीय एकता होगा।